# [बहादुर]

## सारांश/कथावस्तु

### दिलबहादुर से बहादुर बनना

दिलबहादुर 12-13 साल का पहाड़ी नेपाली लड़का है। पिता युद्ध में मारे गये और माता गुस्सैल स्वभाव की है। माँ की मार के कारण भागकर एक मध्यम वर्गीय परिवार में नौकरी कर ली, जहाँ गृहस्वामिनी निर्मला बड़ी उदारता से दिल बहादुर से नाम केवल बहादुर कर देती है।

### परिश्रमी एवं हँसमुख बहादुर

बहादुर ईमानदार एवं परिश्रमी लड़का है, वह पूरे घर की साफ-सफाई के साथ-साथ सभी सदस्यों की जरूरतों का भी खयाल रखता है। उसके रहते सभी सदस्य कामचोर, आलसी एवं आरामतलबी हो गये हैं।

हसना और हँसाना उसकी आदत बन गयी है। सोते वक्त रात में कोई न कोई गाना अवश्य गुन-गुनाता है।

## किशोर की बदतमीज़ी

शान शौकत एवं रौब से रहने वाला किशोर निर्मला का बड़ा लड़का है। अपने सारे काम बहादुर को सौंप रखे हैं। छोटी-छोटी बात पर बहादुर को गाली देने से भी नहीं चूकता है। मौका पड़ जाए तो पीट भी देता है। बहादुर पिटाई पाकर भी बहुत देर कोने में खड़ा हो जाता है, फिर वैसे ही सारे काम शुरू कर देता है।

एक दिन किशोर ने उसे 'सुअर का बच्चा' कह दिया जिससे उसके स्वाभिमान को ठेस पहुँची। किशोर का काम करने को मना कर दिया। पूछने पर उत्तर दिया — "बाबूजी, भैया ने मेरे मरे बाप को क्यों लाकर खड़ा कर दिया?" इतना कहकर वह रो पड़ा।

## निर्मला के रिश्तेदार द्वारा चोरी का आरोप

निर्मला के व्यवहार में भी कुछ परिवर्तन आने लगा था। बहादुर के लिए उसने रोटियाँ सेकनी बन्द कर दीं। स्वयं सेंककर खाये। एक दिन निर्मला के घर रिश्तेदार आए। उन्होंने चाय नाश्ते के दौरान ग्यारह रु० चोरी होने की बात कही। सबने बहादुर पर शक किया। लगातार बहादुर के मना करने पर भी उसे डराया, धमकाया, पीटा चूंकि बहादुर पर इल्जाम झूठा था उसने भी पीटा।

## घरवालों का बहादुर के प्रति कटु व्यवहार

इस घटना के बाद बहादुर खिन्न रहने लगा। सभी उसे कुत्ते की तरह दुत्कारने लगे। वह समझ गया कि अब घर वाले उसके प्रति उदार नहीं हैं। वह बड़ी बेचैनी और घबराहट महसूस करने लगा।

## बहादुर का घर से भागना

एक दिन उसके हाथ से सिल छूटकर गिर गया। दो टुकड़े हो गए। पिटाई के डर से वह घर से भाग गया। अपना सारा सामान वहीं छोड़ गया। किशोर को अब उसकी ईमानदारी पर विश्वास हो गया था और वे सभी यह भी जानते थे कि रिश्तेदारों ने उसे झूठा इल्जाम लगाया था। अन्त में वे सभी पश्चाताप करने लगे।

Gyansindhu Coaching Classes

श्री अमरकान्त द्वारा रचित 'बहादुर' कहानी एक मध्यमवर्गीय परिवार के जीवन से सम्बन्धित समस्याओं पर आधारित है। इसमें एक बेसहारा पहाड़ी लड़के की मार्मिक कथा का वर्णन है। कहानी के तत्त्वों के आधार पर प्रस्तुत क़हानी की समीक्षा इस प्रकार है–

## कथानक

इस कहानी की कथावस्तु में मध्यम वर्गीय परिवार की साधारण-सी लगने वाली कई बातों के माध्यम से मानवीय करुणा को प्रदर्शित किया गया है। आरम्भ से अन्त तक यह कहानी बहादुर के इर्द-गिर्द ही घूमती है। सहजता, रोचकता, संक्षिप्तता कहानी की विशेषता है तथा यह एक यथार्थवादी कहानी भी है।

बहादुर एक बेसहारा पहाड़ी नेपाली लड़का है। उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है और उसकी माँ उसे हमेशा मारती रहती है, जिससे तंग आकर वह घर से भाग जाता है और एक मध्यम वर्गीय परिवार में घरेलू नौकर के रूप में नौकरी करने लगता है। वह हँसमुख, ईमानदार और परिश्रमी लड़का है। निर्मला, जो गृहस्वामिनी है, बहादुर का पूरा ध्यान रखती है। निर्मला का बड़ा लड़का किशोर बहादुर पर पूरी तरह आश्रित है। इसके बावजूद वह ज़रा-ज़रा सी बात पर बहादुर को गालियाँ देता है तथा पीटता है। कुछ दिन बाद निर्मला का व्यवहार भी बहादुर के प्रति बदल जाता है। एक दिन किशोर ने बहादुर के पिता को सम्बोधित कर गाली दे दी, जो बहादुर को बहुत बुरी लगी और उस दिन उसने न तो कोई काम किया और न ही खाना खाया। एक दिन निर्मला के घर कुछ रिश्तेदार आए, उन्होंने बहादुर पर ग्यारह रुपये चोरी करने का आरोप लगाया तथा इसी के लिए निर्मला के पति ने बहादुर की पिटाई कर दी। इस घटना से बहादुर बहुत आहत हो गया और वह चुपचाप घर छोड़कर चला गया। उसके जाने के बाद घर वालों को उसकी कमी महसूस हुई और बाद में सभी लोग पश्चाताप करने लगे। इस प्रकार यह कहानी एक अल्पवयस्क नौकर के मनोविज्ञान को भी प्रकट करती है।

## पात्र और चरित्र-चित्रण

प्रस्तुत कहानी का सर्वाधिक प्रमुख पात्र एवं नायक बहादुर है, जिस पर पूरा कथानक टिका हुआ है। इस चरित्र के महत्त्व का अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि इस चरित्र के आधार पर ही कहानी का शीर्षक रखा गया है। उसके स्वभाव में कुछ ऐसी सरसता, भोलापन, करुणा एवं वेदना है, जिसके कारण उसे नज़रअन्दाज़ करना असम्भव है। अन्य पात्रों में निर्मला जो

## कथोपकथन या संवाद

इस कहानी के संवाद अत्यन्त सरल, संक्षिप्त, स्वाभाविक, स्पष्ट, रोचक, सार्थक तथा गतिशील हैं। ये पात्रों के अनुकूल तथा सटीक हैं। संवाद संक्षिप्त तथा स्वाभाविक कथोपकथन पर आधारित हैं।

## देशकाल और वातावरण

कहानी में देशकाल और वातावरण का भी ध्यान रखा गया है। कहानी में निम्न तथा मध्यम वर्गीय परिवार के लिए सजीव तथा स्वाभाविक वातावरण का चित्रण किया गया है। नौकर पर रोब जमाना, उससे जी तोड़ काम कराना, उसे बात-बात पर बार-बार पीटना, गाली देना आदि घटनाओं ने पारिवारिक वातावरण को मार्मिक बना दिया है।

## भाषा–शैली

प्रस्तुत कहानी में अमरकान्त ने सरल, स्वाभाविक और सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है तथा चित्रात्मक शैली का भी प्रयोग किया गया है। भाषा कथा के अनुरूप है, जिसमें अन्य भाषाओं के शब्द भी लिए गए हैं; जैसे—शरारत, ओहदा, किस्सा, इज़्ज़त आदि उर्दू शब्द हैं। लोकोक्तियों तथा मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है; जैसे—माथा ठनकना, नौ दो ग्यारह होना, पंच बराबर होना आदि। इसके अतिरिक्त इसमें वर्णनात्मक, काव्यात्मक और आलंकारिक शैली का प्रयोग किया गया है।

## उद्देश्य

यह कहानी निम्न एवं मध्यमवर्गीय समाज के मनोविज्ञान के वास्तविक चित्र को प्रदर्शित करती है। इस कहानी के माध्यम से वर्ग भेद मिटाने को प्रोत्साहन दिया गया है, जो मानवीय सहानुभूति के आधार पर ही मिट सकता है।

## शीर्षक

कहानी का 'बहादुर' शीर्षक आकर्षक व मुख्य पात्राधारित है। अमरकान्त जी की कहानी के शीर्षक व्यक्ति-विशेष से सम्बन्धित हैं। सम्पूर्ण कहानी की कथावस्तु घटनाएँ 'बहादुर' के इर्द-गिर्द घूमती हैं। 'बहादुर' कहानी का शीर्षक अत्यन्त सरल, संक्षिप्त एवं रोचक है, जो पाठक के मन में कौतूहलता उत्पन्न करता है। अतः शीर्षक की दृष्टि से 'बहादुर' कहानी सफल व सार्थक है।

# कहानी की समीक्षा हेडिंग्स

↓

1. कथानक / कथावस्तु
2. पात्र एवं चरित्रचित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. देशकाल एवं वातावरण
5. भाषा शैली
6. उद्देश्य
7. शीर्षक

ज्ञानसिन्धु कोचिंग क्लासेज
अनुशासनेन विद्या अभ्यासेन विद्या
ज्ञानात् मुक्तिः
|| ज्ञानम् मनुष्यस्य तृतीय नेत्रम् ||

## बहादुर
## चरित्र-चित्रण

↓

### हैडिंग्स

↓

1. छल-कपट रहित भोला बालक
2. परिश्रमी
3. हँसमुख एवं मृदुभाषी
4. ईमानदार एवं सच्चा हृदय
5. सहनशील एवं स्वाभिमानी
6. मातृ-पितृ भक्त बालक
7. व्यवहार कुशल
8. स्नेही बालक

Gyansindhu Coaching Classes By Arunesh Sir

अमरकान्त द्वारा लिखित कहानी 'बहादुर' में मुख्य रूप से चार पात्र हैं—लेखक या निर्मला का पति, निर्मला, पुत्र किशोर तथा पहाड़ी नौकर दिलबहादुर, जिसे निर्मला ने केवल बहादुर नाम दे दिया था और यही बहादुर कहानी का नायक है। बहादुर के चरित्र की अनेक विशेषताएँ हैं, जिन्हें निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर देखा जा सकता है—

## छल-कपट रहित भोला बालक

12-13 वर्ष का नेपाली बालक बहादुर बहुत ही भोला है और छल-कपट से कोसों दूर है। उसमें न तो किसी प्रकार की कृत्रिमता या बनावटीपन है और न ही किसी बात को छिपाने की कला। वह किसी भी बात का बिलकुल सच एवं स्पष्ट उत्तर देता है।

## परिश्रमी

बहादुर अत्यन्त परिश्रमी लड़का है। वह घर के सभी सदस्यों के अधिकांश कार्यों को करता है और उन्हें करते हुए न कोई आलस्य दिखाता है और न कोई अनमनापन। वह बड़े ही प्यार एवं ज़िम्मेदारी के साथ अपने कार्यों को सम्पन्न करता है।

## हँसमुख एवं मृदुभाषी

बहादुर हर समय हँसते रहने वाला लड़का है। वह किसी भी बात को कहकर अपनी नैसर्गिक, स्वाभाविक हँसी ज़रूर हँसता है, जो सामने देखने-सुनने वालों के हृदय को झंकृत कर देती है। वह सभी लोगों के प्रश्नों का उत्तर बड़े ही मीठे स्वर में हँसकर देता है।

## ईमानदार एवं सच्चा हृदय

गरीब होने के बावजूद भी बहादुर अत्यधिक ईमानदार बालक है, जिसे बेईमानी छू तक नहीं पाई है। उसके मन में कोई लालच नहीं है। घर में कहीं गिरे या पड़े पैसों को वह निर्मला के हाथों में रख देता है। वह घर छोड़कर जाते समय भी अपना सामान तक नहीं ले जाता है।

## सहनशील एवं स्वाभिमानी

बहादुर बड़ा ही सहनशील बालक है। वह घर के सारे काम करने के बावजूद निर्मला की डाँट खाता रहता है। किशोर द्वारा भी कई बार बदतमीज़ियाँ की जाती हैं, जिन्हें वह थोड़ी देर में ही भूल जाता है और अपने काम में पूर्ववत् लग जाता है। एक बार किशोर द्वारा उसके पिता से सम्बन्धित गाली देने पर उसका स्वाभिमान जाग जाता है। वह किशोर का काम करने से इनकार कर देता है।

## मातृ-पितृभक्त बालक

बहादुर का हृदय मातृभक्ति एवं पितृभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। माँ द्वारा पीटे जाने के कारण घर से भागा बहादुर माँ के पास जाना नहीं चाहता, लेकिन माता-पिता के प्रति अपने फर्ज को वह अच्छी तरह समझता है।

इसीलिए वह अपने कमाए पैसों को माँ को ही देना चाहता है। अपने पिता के प्रति प्रेम ने ही उसे किशोर का काम करने से मना करने हेतु प्रेरित किया।

## व्यवहार कुशल

बहादुर बहुत व्यवहार कुशल बालक है। इसी व्यवहार कुशलता के कारण वह घर के सभी सदस्यों को अत्यधिक प्रभावित कर देता है। मोहल्ले के बच्चों को भी वह अपने गाने सुनाकर मोहित कर लेता है।

## स्नेही बालक

वह निर्मला के अन्दर अपनी माँ की छवि देखता है। वह स्नेह का भूखा है। जब निर्मला उसका ध्यान रखती है, तो वह भी बीमार निर्मला का बहुत ध्यान रखता है। उसे निर्मला के स्वास्थ्य की बहुत चिन्ता है।

इस प्रकार, बहादुर पाठकों के हृदय-पटल पर अपना अमिट चित्र अंकित कर देता है। पाठक उसे लम्बे समय तक याद रखते हैं।

Gyansindhu Coaching Classes